# परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में

## कथनी-करनी में समानता रखें

केलवा, २ अगस्त। महाप्रज्ञ सेवा प्रकल्प द्वारा गुलाब कौशल्या चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर के सौजन्य से छहदिवसीय निःशुल्क विकलांग सहायता शिविर का समापन। बड़ी संख्या में उपस्थित विकलांगों को आवश्यकतानुसार जयपुर फुट, केलिपर, बैसाखियां आदि वितरित किए गए। प्रकल्प के अध्यक्ष शासनसेवी श्री नरेश मेहता ने ट्रस्ट द्वारा समाज कल्याण की दिशा में किए जा रहे कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री प्रमोद जैन भाया का परिचय प्रस्तुत किया। सेवा प्रकल्प के मंत्री श्री राकेश नौलखा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत एवं महामंत्री श्री सुरेन्द्र कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

श्री प्रमोद जैन भाया ने कहा--'असहाय, पीड़ित और दुःखी लोगों को सेवा की जरूरत होती है। महाप्रज्ञ सेवा प्रकल्प इस संदर्भ में सराहनीय कार्य कर रहा है। मेरा परम सौभाग्य है कि ऐसे कार्यक्रम में उपस्थित होने के साथ-साथ परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन भी हुए। आचार्यश्री जैसे संत पुरुषों के आशीर्वाद व मार्गदर्शन से ही हमें सच्ची राह मिलेगी।'

मंत्री मुनिश्री के प्रेरक वक्तव्य के पश्चात अखिल भारतीय अणुव्रत महासमिति के निवर्तमान अध्यक्ष श्री निर्मल रांका एवं महामंत्री श्री विजयराजजी सुराणा ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। महासमिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री बाबूलालजी गोलछा ने अपनी भावी कार्य योजना प्रस्तुत की। कार्यक्रम में जिला कलक्टर श्री प्रीतम बी. यशवंत, बारां के जिला प्रमुख श्री रामचरण एवं उनके निजी सहायक श्री सुबोध जैन, पी.डब्ल्यू.डी. के ए.सी.ई. श्री अनिल शर्मा आदि उपस्थित थे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'आत्मा अपने स्वरूप को प्राप्त हो सकती है, बशर्ते कि वह संपूर्ण रूप से कर्ममुक्त बने। मलिन आत्मा के कर्म चिपकते हैं, जबकि सिद्धात्मा के कर्मों का बंधन नहीं होता। सिद्धत्व की प्राप्ति में मात्र अशुभ कर्म ही नहीं, शुभकर्म भी बाधक हैं। हमारा जैसा चित्त होगा, वैसी ही भावना हमारे मन में विद्यमान रहेगी, इसलिए चित्तवृत्ति को धार्मिक बनाना अपेक्षित है। प्रयास हो कि मन विकारों से ग्रसित न हो तथा कथनी-करनी में समानता रहे।'

राजनीति को सेवा का एक माध्यम बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'बहुत से लोग राजनीति में रहकर सेवा करते हैं। जनता की समस्याओं के निराकरण का प्रयास करते हैं। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह भी एक अच्छी बात होती है। कुछ लोग सार्वजनिक जीवन में रहकर लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर कार्य करते हैं। श्रावक नरेशजी अपने ट्रस्ट के माध्यम से सेवा का प्रकल्प चलाते हैं। कई वर्षों से ये इस क्षेत्र में लगे हुए हैं।' आचार्यवर ने इस अवसर पर विकलांगों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया।

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'अणुव्रत अधिवेशन संपन्नता की ओर है। कार्यकर्ता अच्छे ढंग से कार्य को आगे बढ़ाते रहें। उनका उत्साह बना रहे। नवनिर्वाचित अध्यक्ष बाबूलालजी गोलछा निर्मलजी के कार्य को आगे बढ़ाएं। निर्मलजी शासनसेवी मोतीलालजी रांका के पुत्र हैं। कहा जा सकता है कि ये एक अच्छे पिता के अच्छे पुत्र हैं।' पूज्यप्रवर ने निर्मलजी रांका व जुगराजजी नाहर की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें **'अणुव्रतसेवी'** के संबोधन से संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

पिछले दिनों सरदार ाहर-अहमदाबाद का छाजेड़ परिवार अपने परिवार के स्व. श्री बुधमलजी छाजेड़ एवं स्व. श्रीमती केसरदेवी छाजेड़ के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री मालचन्दजी छाजेड़ के नेतृत्व में पूज्य चरणों में उपस्थित हुआ। पारिवारिक जनों को सेवा का अवसर प्रदान कर आचार्यवर ने छाजेड़ परिवार की सेवाओं का उल्लेख करते हुए सबको धार्मिक प्रेरणा प्रदान

www.terapanthinfo.com

की।

**प्रशस्त होगा कल्याण का पथ**

**३ अगस्त।** परम श्रद्धेय आचार्यवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम में संबोधि के तीसरे अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'पुण्य मुक्ति का हेतु नहीं होता और न ही उसका स्वतंत्र रूप में बंधन होता है। निर्जरा के साथ ही पुण्य का बंध संभव है। संबोधिकार ने कहा कि पुण्य अथवा भौतिक सुखों में आसक्ति और उनकी कामना करता हुआ व्यक्ति दुःखों का अर्जन कर लेता है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति अन्तर्मुखी बनता है, त्यों-त्यों वह भोगों से विमुख होता चला जाता है। उत्तम तत्त्वों के ज्ञान से साधक के मन में विषयों के प्रति अनाकर्षण होने लगता है। भोगों से अनाकर्षण और उत्तम तत्त्वों के बोध से कल्याण का पथ प्रशस्त होता है।'

जैन वाङ्मय में उल्लिखित काम और भोग--इन दो शब्दों का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'पांच इन्द्रियों में श्रोत्र और चक्षु के विषय काम कहलाते हैं और शेष तीन--स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय के विषयों को भोग कहा जाता है। इन्द्रिय विषयों के प्रति राग-द्वेष के भाव से बचने का प्रयत्न करें।' आचार्यवर ने अणुव्रत के संदेश को अंगीकार करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से जनता को नैतिक मूल्य और संयम को आत्मसात करने हेतु प्रेरित किया। अहिंसा, संयम, नैतिकता, करुणा आदि जीवन को उच्च भूमिका पर ले जाने वाले तत्त्व हैं। व्यक्ति उन्हें आत्मगत कर परम सुख और शांति की दिशा में अग्रसर हो सकता है।' आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनि का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

**संयम से स्वतः होता है अनुशासन का पालन**

**४ अगस्त।** पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन मंगल प्रवचन में कहा--'संसारी आत्मा कर्म पुद्‌गलों को आकर्षित करती रहती है। संवर के द्वारा इन पुद्‌गलों के आगमन का पथ रोका जा सकता है, उनके प्रवाह को निरुद्ध किया जा सकता है। जैन साधना पद्धति में संवर का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि नये कर्मों के आगमन का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है तो पूर्वार्जित कर्म पुद्‌गल शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। चौदहवें गुणस्थान में संवर पूरी तरह से सध जाता है और आत्मा कुछ ही क्षणों में संसार से मुक्त हो जाती है।'

संयम की प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'जीवन में यदि संयम होता है तो अनुशासन का अनुपालन आसान बन जाता है। अन्यथा उनके अनुपालन में कठिनाई की अनुभूति होती है। लोकतंत्र की सुव्यवस्था के लिए कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन आवश्यक तत्त्व होते हैं। इन दोनों के बिना लोकतंत्र में समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। न केवल लोकतंत्र अपितु सामाजिक और पारिवारिक संगठन में भी अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा का अभाव समस्याओं का उत्पादक बन जाता है। संयम से अनुशासन का पथ स्वतः प्रशस्त हो जाता है। व्यक्ति अपने संयम को परिपुष्ट और मन को नियंत्रित करने का प्रयास करे। साधना के लिए संयम की नितान्त आवश्यकता होती है। उसके बिना साधना असंभव है। साधक संयम की साधना के द्वारा मुक्तिश्री का वरण कर सकता है।'

कार्यक्रम में मंत्रीमुनिश्री का भी अभिभाषण हुआ। राजनगर से समागत श्री सुशील बड़ाला ने ग्यारह की तपस्या में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। उपासिका श्रीमती तारा दूगड़ ने सुमधुर गीत का संगान किया। आज बोरज-मुम्बई निवासी श्री ख्यालीलालजी परमार ने मुम्बई से सिरियारी की ओर पदयात्रा करते हुए सोलहवें दिन पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

**कठिन कार्य करें**

www.terapanthinfo.com

**५ अगस्त।** परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रातःकालीन मंगल प्रवचन में कहा--'साधना के क्षेत्र में संयम का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। संयम की साधना कुछ कठिन भी होती है। प्राकृत वाङ्मय में कहा गया है कि पांच इन्द्रियों में रसनेन्द्रिय पर विजय मुश्किल कार्य होता है। आठ कर्मों में मोहनीय कर्म का क्षय सबसे कठिन होता है, पांच महाव्रतों में ब्रह्मचर्य व्रत की साधना अति दुष्कर है और तीन गुप्तियों में मनोगुप्ति की साधना अत्यन्त कठिन है। लेकिन जिसे आगे बढ़ना होता है, उसे कठिन से कठिन कार्य का निष्पादन करना होता है।' जनसमूह को जिह्वा संयम की प्रेरणा प्रदान करते हुए श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'संयम की साधना अनेक प्रकार से की जा सकती है। उनमें से एक है जिह्वा का संयम। इसके दो भेद हैं--खाद्य संयम और वाणी संयम। साधना और स्वास्थ्य की दृष्टि से खाद्य संयम महत्त्वपूर्ण होता है। लंघन भी खाद्य संयम का एक प्रकार है। इसे परमौषध माना गया है। व्यक्ति खाद्य संयम के साथ अपनी वाणी पर भी संयम करने का अभ्यास करे। कटु वचनों के प्रयोग से पारस्परिक संबंधों में कटुता आ सकती है। कटु और मिथ्या भाषा का प्रयोग न करने का संकल्प बड़ी साधना होती है।'

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'विद्यार्थियों में ज्ञान और आचार--दोनों का विकास अपेक्षित होता है। विद्यार्थी का लक्ष्य होता है--विद्यार्जन। आलस्य इस लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक बनता है। पुरुषार्थ के द्वारा साफल्य को अर्जित किया जा सकता है। विद्यार्थियों के सामने संभावित लम्बा भविष्य होता है। उसे सफल बनाने के लिए जीवन में धर्म का अवतरण अपेक्षित होता है। जिस व्यक्ति के जीवन में धर्म नहीं होता, वह अच्छा और जागृत जीवन नहीं जी सकता। स्वस्थ जीवनशैली के लिए धर्म की साधना जरूरी है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने श्रद्धालुओं को सामायिक करने का प्रतिबोध देते हुए कहा--'साधु तो संवर अर्थात संयम की साधना करते ही हैं, श्रावक भी आंशिक रूप में वह साधना कर सकते हैं। सामायिक भी संयम की एक साधना है। कुछ अंशों में निष्कर्मता की साधना है, प्रवृत्ति से मुक्त होने की साधना है। श्रावक- श्राविकाओं में सामायिक के प्रति निष्ठा बनी रहे और वे उसके प्रयोग के द्वारा आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ते रहें।' पूज्यवर ने इस अवसर पर छहकोटि, आठकोटि और नौकोटि सामायिक के इन तीन प्रकारों को भी व्याख्यायित किया।

प्रवचन के पश्चात पूज्यप्रवर ने केलवा से आमेट तक के यात्रा-पथ की उद्घोषणा की। (यात्रा पथ पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुका है) कार्यक्रम मे मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। रतनगढ़ से समागत महिला मंडल और कन्यामंडल ने गीत के माध्यम से अपने भावोद्गार व्यक्त किए। श्री रमेश पटावरी ने इरोड तेरापंथ समाज की निर्देशिका पूज्य चरणों में भेंट की।

## मेधावी छात्र सम्मान समारोह एवं द्विदिवसीय कार्यशाला

**६ अगस्त।** आज पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में मेधावी छात्र सम्मान समारोह एवं द्विदिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। श्री के. सी. जैन ने मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना की विशद जानकारी देते हुए बताया--इस परियोजना के अंतर्गत अब तक एक करोड़ साठ लाख बीस हजार आठ सौ पचहत्तर की राशि छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जा चुकी है। प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलालजी ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री ने कार्यक्रम में उपस्थित मेधावी विद्यार्थियों को उत्प्रेरित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--' कर्मों से बंधा हुआ जीव शरीर को प्राप्त करता है। जहां शरीर होता है, वहां वीर्य की स्फुरणा होती है, शक्ति समुत्पन्न होती है। उस शक्ति के द्वारा जीव मन, वचन और काया की प्रवृत्ति करता है। जहां प्रवृत्ति होती है, वहां मोह और प्रमाद का होना संभव हो सकता है। उससे बचने के लिए जागरूकता की अपेक्षा होती

है। उस जागरूकता के द्वारा मन, वचन और काया की प्रवृत्ति को मोह से विलग रखने का अभ्यास एक बड़ी साधना है।'

मेधावी छात्र-छात्राओं को संबोध प्रदान करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'मेधा उस शक्ति का नाम है, जो धारण करने में समर्थ होती है। जिसकी बुद्धि स्थिर और तीक्ष्ण होती है, वह मेधावी कहलाता है। ज्ञान का विकास प्रशस्य है, किन्तु चारित्र विकास के अभाव में कोरा ज्ञान अपर्याप्त है। अतः ज्ञान के साथ चारित्र का विकास भी नितान्त अपेक्षित है। ऐसा होने पर बुद्धि में शुद्धि बनी रहती है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में आई.क्यू. का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह विकास का एक आयाम है। विकास की परिपूर्णता अथवा सर्वांगीण विकास के लिए उसके साथ ई.क्यू. और एस.क्यू. की आवश्यकता रहती है। ज्ञान के साथ चारित्र का योग हो तो विद्यार्थी सफलता को प्राप्त कर सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने इस संदर्भ में आगे कहा--'मेधावी छात्र-छात्राओं के पास मेधा का बल होता है, जिसे पल्लवित और पुष्पित करने के लिए संरक्षण की अपेक्षा होती है। मेधावी छात्र-छात्राओं को जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का संरक्षण प्राप्त हो रहा है। बालक-बालिकाओं के समुचित विकास में संरक्षण महत्त्वपूर्ण होता है। उसके बिना बच्चों का विकास अवरुद्ध भी हो सकता है। ये विद्यार्थी अपनी चित्तवृत्तियों और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखें, नशे की प्रवृत्ति से दूर रहें, इनके विचार और व्यवहार अच्छे हों और पुरुषार्थ के द्वारा ये अपने व्यक्तित्व को सुशिक्षित और सुसंस्कारी बनाएं।' आचार्यवर की प्रेरणा से विद्यार्थियों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया। इस द्विदिवसीय सम्मान समारोह कार्यशाला में सैंकड़ों विद्यार्थी संभागी बने। उन्हें विविध विषयों का प्रशिक्षण दिया गया और विभिन्न श्रेणी के मेधावी छात्र-छात्राओं को 'गणाधिपति तुलसी स्वर्णपदक', 'आचार्य महाप्रज्ञ स्वर्णपदक', 'आचार्य महाश्रमण स्वर्णपदक' एवं 'जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा रजतपदक' व प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

आज सायंकाल विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री दिनेशजी अपने क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ पूज्यवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए और विविध विषयों पर वार्तालाप किया।

## जैन रामायण पर व्याख्यान

परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में आज से रात्रि में जैन रामायण पर आधारित व्याख्यान प्रारंभ हुआ। व्याख्यान का प्रारंभ करते हुए आचार्यवर ने कहा--'राम नाम परमात्मा का वाचक है। भगवान राम के जीवन से सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। रामायण वाचन के अंतर्गत इसके रचनाकार यति केशराजजी की कल्पना की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'राम नाम का उच्चारण करते समय जब 'रा' बोलते हैं तो होंठ खुल जाते हैं। इसका तात्पर्य है कि भीतर के पाप बाहर निकल जाएं और जब 'म' का उच्चारण करते हैं तो होंठ बंद हो जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि पाप पुनः भीतर न जाएं।' आचार्यवर ने रामायण को रोचक व प्रेरणादायी बताते हुए कहा--'जैन रामायण पर इस बार मंत्री मुनिश्री का व्याख्यान होगा। मुनिश्री ने कई बार इसका वाचन किया है। आपके फरमाने का अच्छा क्रम है। इस बार सोचा--हमें तो कस निकालना है, उपयोग लेना है। कामधेनु गाय को तो दुह लेना चाहिए।'

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने रामायण का वाचन करते हुए कहा--'रामायण का कालमान बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रत के शासनकाल का है। मुनिश्री ने इस अवसर पर रामायण के प्रारंभिक प्रसंगों को विस्तार से बताया।

## विकसित हो विद्यार्थियों में विनम्रता व सहिष्णुता

**७ अगस्त।** प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'मेधावी छात्र-छात्राएं समाज की धरोहर हैं। वे अपने दिमाग में नकारात्मक भावों को न आने दें। यदि विजातीय तत्त्वों ने प्रभावित करना शुरू कर दिया तो मस्तिष्क की ग्रहणशक्ति कमजोर हो जाएगी।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'कर्मबंधन में कषाय व योग कारण बनते हैं। इनसे मुक्त रहकर ही व्यक्ति कर्मबंधन से विलग रह सकता है।' देश के विभिन्न प्रान्तों से समागत मेधावी छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'शिक्षा जगत के लिए जीवनविज्ञान के प्रयोग बहुत उपयोगी हैं। इन प्रयोगों से विद्यार्थी अपनी मेधा शक्ति को विकसित एवं वृद्धिंगत कर सकते हैं। विद्यार्थियों को आन्तरिक परिष्कार के साथ अपने आवेग एवं आवेश को भी नियंत्रित करना चाहिए। इससे ज्ञान-ग्रहण की क्षमता का विकास होता है और उनमें विनम्रता, सहिष्णुता जैसे मूल्यों का अवतरण होता है। मेधावी छात्रों को अध्यात्म विद्या का भी अध्ययन करना चाहिए।'

आज के 'फ्रेंडशिप डे' का उल्लेख करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--''मित्रता का व्यापक सूत्र है--**'मित्ती मे सव्वभूएसु'—**सब जावों के साथ मेरी मैत्री हो। यह मित्रता स्वार्थ की चौखट से बाहर की हो। वस्तुतः हमारी आत्मा ही हमारी सच्ची मित्र होती है। व्यावहारिक दृष्टि से दूसरों को भी मित्र बनाया जा सकता है।' सच्ची मित्रता को परिभाषित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मित्रता पवित्र व हितकारी हो। वह आपका वास्तविक मित्र है जो आपको सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। विपरीत परिस्थिति में भी वह किसी को धोखा नहीं देता। ऐसी मैत्री विकसित हो तो वह लाभदायी हो सकती है।'

कार्यक्रम में मुनि रजनीशकुमारजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए अपनी संकलित पुस्तक 'महाप्राण महाप्रज्ञ' आचार्यवर को उपहृत की। आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद पूज्य आचार्यवर, साध्वीप्रमुखाजी, मुख्य नियोजिकाजी सहित साधु-साध्वियों द्वारा रचित गीत व कविताएं इसमें संग्रहीत हैं। मुनि किशनलालजी ने जीवनविज्ञान की अवगति दी।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के संदर्भ में आयोजित हो रहे स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों के अंतर्गत आज तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा कान्फ्रेंस हॉल में कान, नाक एवं गला रोग (ई.एन.टी.) का निःशुल्क जांच शिविर आयोजित हुआ। प्रातः दस बजे से सायं चार बजे तक आयोजित इस शिविर में ५४१ रोगियों की जांच की गई। उन्हें यथावश्यकता श्रवण यंत्र और औषधि वितरित की गई।

## समीचीन बने हमारा आचार और व्यवहार

**८ अगस्त।** प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्रीमुनि सुमेरमलजी स्वामी ने कहा--'प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ज्ञान साधना व आराधना का समावेश होना चाहिए। अनवरत उपासना एवं धार्मिक चिंतन से जीवन में श्रेष्ठ संस्कार उज्जीवित होते हैं।'

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि के तीसरे अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हर प्राणी जन्म लेता है और मृत्यु को प्राप्त होता है। जन्म-मरण का यह चक्र निरंतर गतिमान है। अपने कर्मानुसार प्राणी कष्ट पाता है और कृतकर्मों का फल भोगता है। व्यक्ति चाहता कुछ है और होता कुछ और है। चाहने मात्र से कुछ नहीं होता। फलभुक्ति कृत कर्मों के अनुसार होती है। वृत्ति एवं परिस्थिति के प्रभाव से कर्म का अनुबंध होता है। इस कलिकाल में सम्यक्त्व की प्राप्ति दुर्लभ है। तत्त्व व धर्म को ठीक से समझना सबके वश की बात नहीं है। कर्म निर्जरा के लिए व्यक्ति संयम की चेतना जागृत करे तथा इन्द्रियजन्य भोगों पर विजय प्राप्त करे। इससे हमारा आचार, विचार और व्यवहार समीचीन बनेगा, मन में शुद्धता आएगी, व्यक्तित्व का विकास होगा और सामाजिक स्वस्थता का पथ प्रशस्त होगा।' पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा--'इस जगत में आस्तिकवाद व नास्तिकवाद--दोनों चलते हैं। चार्वाक का दर्शन नास्तिक दर्शन है। इसका अभिमत है कि शरीर और आत्मा एक है। आस्तिकवाद की अवधारणा है कि शरीर और आत्मा दोनों परस्पर पृथक हैं। उनके स्वरूप में भी भिन्नता है। चेतना स्थायी है, जबकि शरीर को अस्थायी माना गया है। कर्मानुसार व्यक्ति स्वर्गगामी और नरकगामी बनता है। कर्मों के संपूर्ण क्षय की स्थिति में आत्मा परमात्मा बन जाती है, मोक्ष की अधिकारी बन जाती है। इसी कारण धर्मगुरुओं के द्वारा धर्माराधना की अभिप्रेरणा दी जाती है।'

साध्वी सरलप्रभाजी ने आज बाईस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। बालमुनि मृदुकुमारजी का आज केशलुंचन हुआ। परम पूज्य आचार्यवर ने उनके संदर्भ में फरमाया--'मुनि मृदुकुमारजी ने आज केशलुंचन कराया है। छोटी उम्र में इस प्रकार लोच कराना विशेष बात है। हमने इनको इकतीस कल्याणक दिए हैं। ये चतुर, बुद्धिमान और सेवाभावी मुनि हैं।'

**कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला**

६-७ अगस्त को परमपूज्य आचार्यवर की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेयुप द्वारा कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला की समायोजना की गई। इस कार्यशाला में तेयुप की विभिन्न शाखाओं के नवर्विाचित पदाधिकारी संभागी बने। संभाागियों को पूज्यप्रवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, मंत्री मुनिश्री, तेयुप प्रभारी मुनि दिनेशकुमारजी, सहप्रभारी मुनि योगेशकुमारजी एवं साध्वी कल्पलताजी ने भी विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला की आयोजना में अ.भा. तेयुप के अध्यक्ष श्री गौतम डागा, महामंत्री रमेश सुतरिया एवं कार्यशाला संयोजक श्री निलेश बैद का निष्ठापूर्ण श्रम रहा।

**पारिवारिक सौहार्द कार्यशाला की समायोजना**

२-४ अगस्त तक पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति केलवा द्वारा पारिवारिक सौहार्द कार्यशाला समायोजित हुई। संभागियों को परम श्रद्धेय आचार्यवर ने पावन प्रेरणा प्रदान की। प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलालजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि मोहजीतकुमारजी एवं श्री बजरंग जैन ने प्रशिक्षण दिया। मुनि विजयकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी एवं मुनि महावीरकुमारजी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन श्री देवीलालजी कोठारी ने किया।

प्रवचनमाला के अंतर्गत प्रकाशित हो रहे **'महाप्रज्ञ ने कहा'** का ४२वां भाग श्री महेन्द्र सुराणा (लाडनूं- भीलवाड़ा) ने पूज्यप्रवर को उपहृत किया।

**स्मृति-संबल**

- पाली निवासी श्रीमती बदनीदेवी ओस्तवाल(धर्मपत्नी-स्व. उदयचन्दजी ओस्तवाल) का स्वर्गवास हो गया। वे मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) की संसारपक्षीया दादीजी थीं। वे सरलमना और धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। परिवार को उन्होंने धर्म के अच्छे संस्कार दिए।
- रेलमगरा निवासी श्री सोहनलाल सोनी का देहावसान हो गया। वे संघ और संघपति के प्रति समर्पित निष्ठावान कर्मठ कार्यकर्ता थे। चार वर्ष तक स्थानीय सभा के अध्यक्ष रहे। उनका जीवन सादगीपूर्ण और सरल था।
- आमेट निवासी, मुम्बई प्रवासी श्री सुरेशकुमार बाफना (सुपुत्र-श्री बंशीलालजी बाफना) का स्वर्गवास हो गया। तेरह वर्ष पूर्व घटित एक हादसे में उनकी कमर से नीचे का भाग निष्क्रिय हो गया था। लेकिन मनोबल प्रशस्त था और धार्मिक भावना प्रवर्द्धमान थी। मरणोपरान्त नेत्रदान का संकल्प था। डॉक्टरों के अनुसार नई तकनीक के द्वारा वह छह व्यक्तियों को दृष्टि उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त होगी।
- सरदार ाहर निवासी, मुम्बई प्रवासी श्रीमती धनश्री छाजेड़(धर्मपत्नी-प्रशान्त, पौत्रवधू श्री रेंवतमलजी छाजेड़) का मात्र ३१ वर्ष की उम्र में ब्लड कैंसर की बीमारी के कारण निधन हो गया। असाध्य बीमारी को उसने जिस मनोबल और समभाव से सहन किया, वह उल्लेखनीय है। असीम वेदना की स्थिति में भी वह लोगस्स का पाठ एवं नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करती थी। अन्तिम समय में बोल न सकने की स्थिति में कागज पर लिखा कि मैंने संथारा स्वीकार कर लिया है

www.terapanthinfo.com

और वह किसी भी स्थिति में अटल है। अन्तिम समय में धार्मिक भावना प्रवर्द्धमान रही।

- कुआंथल निवासी मुम्बई प्रवासी श्री मांगीलाल पिछोलिया का स्वर्गवास हो गया। वे अपने क्षेत्र के राजनीतिक व सामाजिक कार्यकर्ता थे। अहिंसा यात्रा में व्यवस्था देखने वाले श्री पुखराजजी दक के बहनोई थे। नगर पंचायत के वर्षों तक अध्यक्ष रहे। साधु-साध्वियों की सेवा मनोयोग से करते थे।
- रतनगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी श्रीमती रायकंवरीदेवी बैद(धर्मपत्नी-श्री झूमरमलजी बैद) का स्वर्गवास हो गया। वे धर्मानुरागी श्राविका थीं।
- पाली निवासी श्री जुगराज पटवा पोरवाल का देहावसान हो गया। वे आचार्य भिक्षु के सुप्रसिद्ध श्रावक विजयचन्दजी पटवा के परिवार से संबद्ध धार्मिक वृत्ति के श्रावक थे। सामायिक, जप, स्वाध्याय आदि उनकी दिनचर्या के अंग थे। पूरा परिवार शासन के प्रति समर्पित है।
- जसोल निवासी श्री महेन्द्रकुमार भंसाली का स्वर्गवास हो गया। वे साध्वी संगीतप्रभाजी के संसारपक्षीय भाई साध्वी उदितयशाजी के मामा एवं मुमुक्षु भावना के चाचा थे। उनके मन में धर्म के प्रति प्रगाढ़ भावना थी। पूरा परिवार संस्कारी है।
- पड़ासली निवासी जयेश बड़ाला (सुपुत्र श्री ललित बड़ाला) का अल्पवय में निधन हो गया। पड़ासली का बड़ाला परिवार धर्मनिष्ठ और संघनिष्ठ परिवार है।
- गंगाशहर निवासी श्रीमती हस्तीदेवी (धर्मपत्नी-श्री गणेशमलजी पुगलिया) का स्वर्गवास हो गया। उनके मन में धर्म के प्रति गहरी निष्ठा थी। उनके पुत्र देवचन्दजी साधु-साध्वियों की सेवा में संलग्न रहते हैं।
- नान्दशा-गंगापुर निवासी श्री लक्ष्मीलाल बाफना का स्वर्गवास हो गया। वे धार्मिक वृत्ति के श्रावक थे। जप, ध्यान, स्वाध्याय, संतदर्शन आदि का नियमित क्रम था। गांव के बारह वर्ष तक सरंपच रहे। उनकी ईमानदरी और कार्यनिष्ठा को गांववासी आज भी स्मरण करते हैं। गांव के विकास के लिए वे सदैव सचेष्ट रहे।
- लाडनूं निवासी गोंडल-राजकोट प्रवासी श्री करण बरमेचा का पैंतीस वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। वह साध्वी लोकप्रभाजी एवं साध्वी पंकजश्रीजी का संसारपक्षीय भानजा था। वियोग की इस तरह की घटनाएं संसार की नश्वरता का बोधपाठ देती हैं।
- श्री पारसमल गांधी (भीलवाड़ा-बेंगलोर), श्री कजोड़ीमल रांका (आमेट-सूरत), श्री मांगीलाल सिंघवी (चारभुजा), श्री कन्हैयालाल नाहटा (सरदार ाहर-बेंगलोर), श्रीमती पानीबाई नांदेचा (धर्मपत्नी-श्री मोहनलालजी, सेमड़-बोईसर), श्रीमती सायरदेवी बाफना (आमेट-डीसा), श्री शोभालाल ओस्तवाल (भीमगढ़-कांकरोली) का स्वर्गवास हो गया। पारिवारिकजनों ने पूज्यवर के दर्शन कर आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया। सभी दिवंगत आत्माओं के भावी आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

## जैन विद्या परीक्षाएं

समण संस्कृति संकाय जैन विश्वभारती द्वारा अ.भा. स्तर पर समायोजित होने वाली जैन विद्या परीक्षाएं इस वर्ष ५-६ नवम्बर को मध्याह्न में १-४ बजे तक आयोजित होगी। परीक्षाओं के आवेदन की अन्तिम तिथि १० सितम्बर २०११ है। संकाय के निदेशक श्री पन्नालालजी पुगलिया ने यह जानकारी देते हुए बताया--विलंब शुल्क सहित २० सितम्बर तक ही आवेदन स्वीकार होंगे। इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए समण संस्कृति संकाय जैन विश्वभारती से संपर्क किया जा सकता है। अधिकाधिक व्यक्ति जैन विद्या परीक्षाओं में संभागी बनें, तदर्थ साधु-साध्वियों की प्रेरणा और स्थानीय श्रावक समाज का श्रम इसमें नियोजित हो, यह काम्य है।

www.terapanthinfo.com